Course -01

12

Name - Prajya Raj Time - 40 min
Roll no. - 230005 Marks - 16
class - B.Ed 1st year
Date - 26/09/23

Q. Has the concept of childhood been always same or it change with time. Analyse with example.

Ans → According to United Nations Convention on the Rights of the child states that a child is any person under the age of eighteen. Childhood has thus been identified as a stage of life, associated with chronological age, located between infancy and youth and including adolescence.

" Don't limit a child to your own learning, for he was born in another time."
— Rabindranath Tagore

The concept of childhood is not static, it evolves and changes over time in response to cultural, societal and historical shifts. while some fundamental aspects of childhood such as the stages of human development, remain relatively consistent, the way childhood is perceived, experienced and

Understood can vary significantly from one era to another and across different cultures.

Historically, childhood was often viewed differently than it is today. In many ancient societies, children were considered miniature adult responsibilities at a young age. There was little distinction between childhood and adulthood in term of societal role and expectations.

However, several key factors have contributed to change in the concept of childhood over time:—

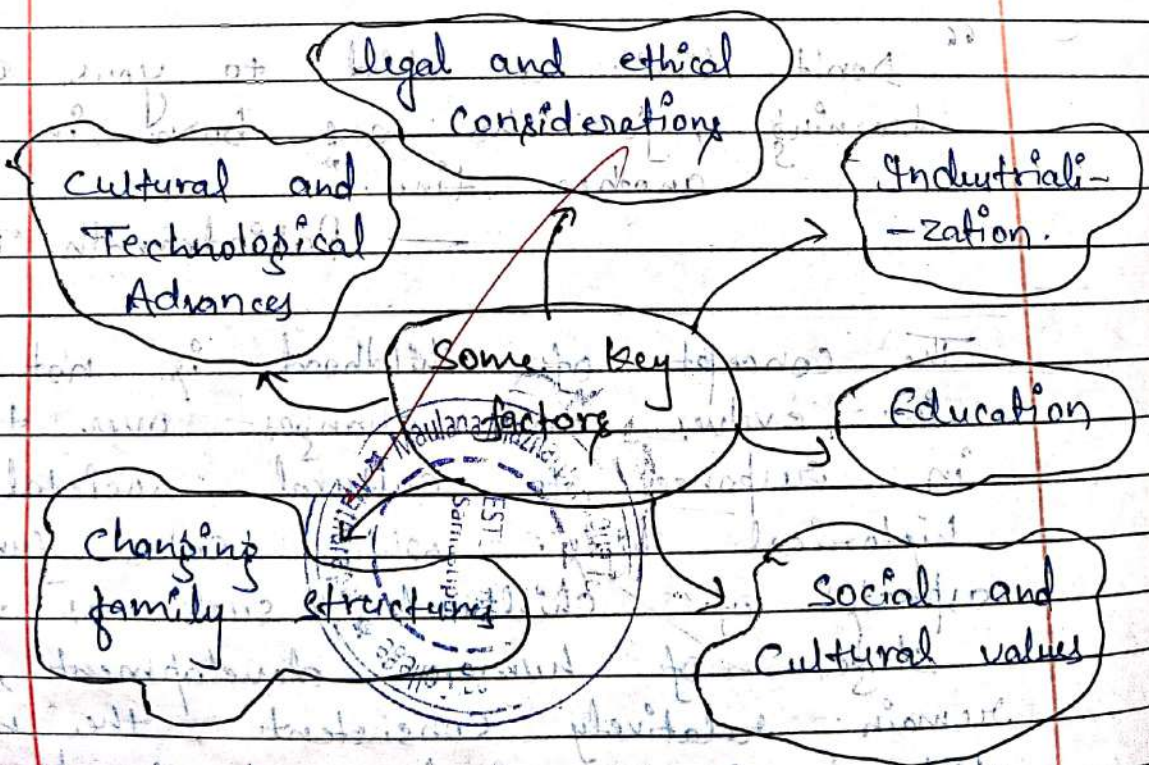

→ **Industrialization :-**

The Industrial Revolution in the 18th and 19th centuries brought about significant changes in the way society viewed childhood. Child labour laws were enacted to protect young workers from dangerous conditions, highlighting the need to safeguard their well-being.

→ **Education :-**

The establishment of compulsory education systems in many parts of the world shifted the focus of childhood towards formal learning and development. This marked a significant change from earlier periods when education was often limited to the elite.

→ **Cultural and Technological Advances :-**

Advances in technological, communication, and media have shaped the experiences of contemporary childhood. The digital age, in particular, has introduced new challenges and opportunities, influencing how children learn, socialize and play.

→ **Changing family structures:** — Evolving family structure including single - parent household and blended families have contributed to shifting dynamics within childhood to shifting dynamics within childhood experiences. These changes have prompted discussions about the roles and responsibilities of parents and caregivers.

→ **Social and cultural values:** — Society's values and beliefs about childhood, including the importance of play, creativity and nurturing have evolved over time. Movements such as the Romantic era's idealization of childhood as a period of innocence have influenced how childhood is perceived.

→ **Legal and Ethical considerations:** — Child protection laws and international conventions like the United Nations Conventions on the Right of the child have reinforced the idea that children have specific rights and need to be protected from harm.

Date
Page

Conclusions :-

The Concept of childhood is not fixed or universal one. It is subject to change, adaptation and reinterpretation as societies and cultures evolve. While some aspects of childhood may remain constant, the overall understanding and experience of childhood continually shift in response to historical, cultural and societal factors. Recognization and understanding these changes is essential for policymakers, educators, parents and society at large to provide appropriate support and care for children in each era.

12

नाम - सुमित कुमार
क्रमांक - 30
दिनांक - 24/09/23
Course - 2

18/16
24/09/023

Q. गुणवक्तापुर्ण शिक्षा से आप क्या समझते है? किसी भी शिक्षा व्यवस्था के लिए यह क्यों आवश्यक है?

उत्तर :

Introduction - गुणवक्तापुर्ण शिक्षा से तात्पर्य एसी शिक्षा है जो हर बच्चे के काम आए। बच्चे के क्षमताओं के संपूर्ण विकास समान रूप से उपयोगी हो। एक शिक्षा गुणवक्ता पूर्ण तब होती है जब हो समाज की जरूरतों को समान रूप से पूर्ण करती हो। हर शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य सीखने वाले को संज्ञानात्मक विकास कराना रहता है। गुणवक्ता पूर्ण शिक्षा एसी शिक्षा है जिसमें ना केवल संज्ञानात्मक विकास का ध्यान रखा जाता बल्कि रचनात्मक विकास भी ध्यान रखा जाता है इसमें बच्चों में सृजनकर्ता का विकास सर्वांगीण रूप से होता है। बच्चा आत्मनिर्भर बनकर समाज और राष्ट्र को विकासात्मक कार्य में अतुलनीय

Scanned with OKEN Scanner

सहयोग देता है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा क्यों जरूरी है?

शिक्षा प्रणाली राष्ट्रीय विकास में सहायक होती है। सभी राष्ट्र इसका निर्णयन करके अपने राष्ट्र में शिक्षा व्यवस्था को लागू कर लोगों में नागरिकता विकसित किया करते है।

शिक्षा की खराब गुणवत्ता से भारत में शिक्षा के खराब परिणाम आ रहे है। जिससे बच्चे अतः योग्य नागरिक बनने से बाहर हो जाते है। उन्हे अच्छी जॉब नहीं मिल पाती है परिणाम स्वरूप उनका जीवन गरीबी में गुजरता है वह आने वाली पीढ़ी को भी अपने परिवार में अच्छी शिक्षा दिलाने में असफल हो जाते है। वह राष्ट्र, देश और समाज का अच्छा मानव संसाधन नहीं बन पाते है। जब शिक्षा में गुणवत्ता आएगी तभी बच्चों में गुणवत्ता आएगी फिर हमारे

Scanned with OKEN Scanner

हमारे देश में भी गुणवत्ता वाले लोग होंगे।

किसी भी शिक्षा का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही होता है क्योंकि शिक्षा ही वह हथियार है जिसके द्वारा मानव अपनी सारी समस्या का समाधान कर सकता है।

* सारी समस्या का एक समाधान *
* गुणवत्ता पुर्ण शिक्षा पाकर *
* बन जाओ महान *

राष्ट्र निर्माण में गुणवत्तापुर्ण शिक्षा की अहम योगदान होता है। इसलिए सारी शिक्षा का उद्देश्य गुणवत्ता पुर्ण शिक्षा हो

Conclusion पुर्ण गुणवत्ता शिक्षा वह शेरनी का दुध है जो पीयेगा वह दहाड़ेगा'। वह एक अच्छे नागरिक बनकर समाज, राष्ट्र में व मानव कल्याण के लिए नितांत आवश्यक

Scanned with OKEN Scanner

कार्य करके लोगों को नई दिशा
प्रदान करते हैं। इन सभी कारणों
से सभी शिक्षा का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण
शिक्षा होती है।

C-3

10/16

Date - 29/08/23
Time - 40M
Name - Stuti Singh
Roll no - 230002

Define Learning. Explain the different types of Learning

शिक्षण
प्रयास
प्रशिक्षण → अधिगम

Learning : अधिगम से तात्पर्य नवीन ज्ञान का अर्जन ही ज्ञान या अधिगम कहलाता है। अधिगम एक निरंतर प्रक्रिया है। अधिगम नयी नयी चीजों को सीखना को कहते हैं। अधिगम विकास की प्रक्रिया है। व्यवहार में परिवर्तन लाना ही अधिगम कहलाता है।

According to Skinner -

* Learning is a progressive behaviour of adoption.

सीखना ही अधिगम कहलाती है। अधिगम के बहुत सारे विधि होती है जैसे के -

→ Learning to be.
→ Learning to know.
→ Learning by doing.
→ Learning to live together.

Scanned with OKEN Scanner

अधिगम के प्रकार –

(I) Factual Learning
(II) Associative Learning
(III) Conceptual Learning
(IV) Perceptive Learning
(V) Introductive Learning
(VI) Specification Learning

(I) Factual Learning → इस अधिगम प्रक्रिया में हम किसी भी चीज को तथ्यों के आधार पर समझते हैं।

* इस अधिगम प्रक्रिया में पूर्व को लेकर हम आगे बढ़ते हैं और उसी से तथ्य को समझते हैं।

* इस अधिगम में बच्चों को fact basis अधिगम कराया जाता है। इस अधिगम प्रक्रिया में तर्क आधारित बातें बताई जाती हैं।

(II) Associative Learning →

इस अधिगम प्रक्रिया में हम शिक्षण को आसान बनाने हेतु उसे किसी चीज जो उस stimuls से जुड़ी है उसे बताते हुए topic को समझाते हैं।

सहकारी - अधिगम अधिगम का वह विधि जो co-relate कर के ही सीखई जाती है।

Date
Page

conceptual Learning :-

इस अधिगम प्रक्रिया में हम जो भी पढ़ाते उसे concept यानी हम नवीन ज्ञान बच्चों का जान कर उसके base को समझ कर आगे का ज्ञान concept basis पर देते हैं।

यह अधिगम प्रक्रिया बच्चों के सोचने समझने की क्षमता को विकसित करता हैं तथा उन्हें तर्क संगत बातों को समझनें में सहकारी होता हैं।

Perceptive Learning -

इस अधिगम प्रक्रिया मे हम पूर्व से की धारणा को लेकर आगे बढ़ते हैं और तब अधिगम कराते हैं।

इस अधिगम प्रक्रिया में Perception यानी स्वयं की मानता के अनुसार चलते हैं।

Introductive Learning

Introductive Learning इस अधिगम प्रक्रिया में हम पहले stimulus को रखते फिर उसके बारे में Introduction देते हैं फिर आगे कि प्रक्रिया होती हैं।

इस अधिगम में हम Intro से आगे की ओर बढ़ते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

(VI) Specification Learning -

इस अधिगम प्रक्रिया में हम किसी भी stimulus को specified रूप से अधिगम कराते हैं।

Name - Shipra Snehil
Class - B.Ed. I^st year
Roll No. - 230020
Course - C5.

Q. आँकड़ा संग्रह की विधियों का वर्णन करते हुए अवलोकन विधि या साक्षात्कार विधि से स्पष्ट करें।

Introduction विज्ञान के क्षेत्र में Research करने के लिए आँकड़ो की आवश्यकता पड़ती है। मगर यदि हमें शोध में accuracy चाहिए तो आँकड़ो का एक सटीक होना आवश्यक है। ऐसी सटीक आँकड़ो को इकट्ठा करने और शोध में accuracy लाने के लिए हमें अनेक विधियों का उपयोग करते है। उनमें से ही एक विधि है अवलोकन विधि (Observation Method)।

अवलोकन Observation शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। यह अंग्रेजी के शब्द Observe से बना है जिसका अर्थ होता है देखना, ध्यान देना या अनुष्ठान करना।

अवलोकन, अपनी नेत्रों से किसी का निरीक्षण कर उसके बाह्य हाव-भाव को देखकर व्यवहार का आकलन करने प्रक्रिया है।

Maulana Mazharul Haque Teachers

ऑक्सफोर्ड डिक्सनरी के अनुसार

"घटनाओं का उसी प्रकार देखना या वर्णन करना जिस प्रकार से कार्य-कारण अथवा कारक के पारस्परिक संबंधों के अनुसार स्वभाविक रूप से घटते है।"

जहोदा एवं कुक के अनुसार

"अवलोकन केवल दैनिक जीवन की ही अत्यधिक व्यापक क्रिया मात्र नहीं है, यह वैज्ञानिक जाँच का भी एक प्राथमिक अंग है।"

अवलोकन सभी ज्ञान का प्रारंभ है। (Observation is the starting point of all Knowledge).

इस विधि को को हम चार रूपों में विभाजित कर सकते है

Formal Observation (औपचारिक अवलोकन)
Informal Observation (अनौपचारिक अवलोकन)
Participant Observation (सहभागी अवलोकन)
Non-Participant Observation (असहभागी अवलोकन)

Scanned with OKEN Scanner

(i) Formal Observation

इस विधि में सामने वाले व्यक्ति (Respondant) को निरीक्षण होने के बारे में ज्ञात होता है। इसमें Researcher (शोधकर्ता) समय, जगह, तारीख, विषय आदि के बारे में पहले ही सूचित कर देता है। तो उत्तरदाता या जिनका भी निरीक्षण होना है वे सतर्क रहकर अपनी तैयारियाँ कर लेते हैं।

इसको हम एक उदाहरण से समझ सकते हैं —

एक शिक्षक को अगर एक वर्गकक्ष के व्यवहार के बारे में जाँच करना है और वे शिक्षक वर्ग में पहले ही सूचना दे देते हैं कि कल आपके व्यवहार और अनुशासन की जाँच होगी तो बच्चे अगले दिन अनुशासित होकर रहते हैं और शांति बनाकर अपने व्यवहार को दर्शाते हैं।

(ii) Informal Observation

इस विधि में न समय पता होता है न ही जगह और न ही तारीख का। यह अवलोकन अचानक लिया जाता है ताकि Respondant को सतर्क होने का मौका न मिले और उसके स्वाभाविक व्यवहार का निरीक्षण हो सके।

Scanned with OKEN Scanner

(iii) Participant Observation इस विधि में Researcher (निरीक्षण कर्ता) स्वयं निरीक्षण करने के लिए उसमें यानि इस प्रक्रिया में शामिल होता है और निरीक्षण करता है। और Respondant के व्यवहार, स्वभाव, मानसिक और शारीरिक क्षमताओं की जाँच करता है।

जैसे - खेल के मैदान में खुद उतरकर उसकी क्षमताओं की जाँच करना।

(iv) Non - Participant Observation इस विधि में Researcher दूर रहकर निरीक्षण करता है जैसे spy करना, Videography द्वारा, CCTV द्वारा।

Limitations

(i) यह विधि महँगी होती है

(ii) यह विधि में निरीक्षणकर्ता ढोंग भी करते है

Objectives.

(i) यह विधि सबसे सटीक आँकड़े देते है।

(ii) यह विधि पर Researcher ज्यादा विश्वास रखते है।

Scanned with OKEN Scanner

CLASSMATE
Date :
Page :

Conclusion

यह विधि में Researcher बाहरी व्यवहार का जाँच करते है और आँकड़ा इकट्ठा करते है। और इस विधि सबसे उत्तम विधि माना जाता है।

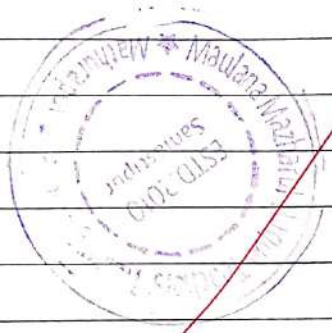

6/8

8-10-23

COURSE - B.Ed CLASS TEST Time - 30 minutes

COURSE Name - C-6 Date → 21/08/23

Name → Kishlay Kumar full marks → 8

Class Roll no → 72

7/8

Q. Gender एवं sex की भूमिका को स्पष्ट करते हुए इसके अंतः संबंध को स्पष्ट करें।

Ans:- Gender शब्द भूमिका के रूप में प्रयुक्त होती है। जेण्डर मे इसका निर्धारण व्यक्ति के द्वारा व्यक्तिगत या सामुहीक रूपों मे किया जाता है। सामुहीक रूप से तात्पर्य यह है की कुछ विशेष वर्ग या समूह के व्यक्तियों के द्वारा यह एक अवधारणा बनी हुई है, जो की यह इसको बहुत ही व्यापक रूप से प्रभावीत करती है, लोगो की मानसिकता इसके विषय में बहुत ही उग्र दिखाई देता है। इसका निर्धारण कुछ धर्म के प्रवर्तको के द्वारा किया जाता है धर्म के प्रवर्तक इसको एक अलग / विशेष तौर पर इसका निर्धारण करते है, जो गलत है, हमलोगो मे कही ना कही ज्ञान की कमी ही है, जीसके कारण कुछ धर्म के ठेकेदारों को यह विशेष अवसर मिल जाता है, हमलोगो इस धर्म के ठेकेदारों या दुकानदारों इसको बचाके रखने होगा और कुछ समाज के बुद्धिजीवी के द्वारा भी इसका संचालन व्यापक रूप से किया जा रहा है, जो की ये समाज की कुरीतीयो को दर्शाती है। हमलोगो को इस समाज के कुछ लोगो से भी सावधानी बरतनी होगी एवं जेण्डर मे प्रभावित हमारे परिवेश की योगदान भी मानी जाती है, इसमे हम सबको यह सोचना वह समझना होगा की कही ना कही ये अवधारणा पूर्णतः गलत है। परन्तु लोग इस पर इतना ध्यान नही देते है। और इसके कारण इसको बढ़ावा मिलता है।

Scanned with OKEN Scanner

ये सभी तरह के समस्याओं से उत्पन्न व्यक्तियों को अंतः सूचक में रखा जाता है।

समाज में समाजीक परिवर्तन एक प्रक्रिया है यह समय हर समय बदलता रहता है जो की समाज के परिवर्तन का ही एक भाग है। समाज में समाजीकरण एवं अवधारणा से जुड़कर संचालीत होते है। यह समाजीकरण एवं अवधारणा मे ही समाज की बहुत सारी अच्छाईयाँ एवं बुराईयाँ भी छीपी हुई रहती समाजीकरण में हमेशा नई-नई समाजीकरण व उसकी अवधारणाएं समय पर बदलती रहती है जो इस समाजीकरण व इस अवधारणा को बदलने में मदद करती है। हम जानते है, की समाजीकरण की अवधारणा में परिवार, समुदाय, व्यक्ति विशेष के रूप मे प्रभावीत करते है, परिवार से तात्पर्य यह है, की समाजीकरण मैं परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो व्यक्तियों को समाज मे एक विशेष पहचान दिलाने मे मदद करता है। समुदाय से यह तात्पर्य है की लोगो का या व्यक्तियों का कुछ विशेष समूह जो की समुदाय बनती है यह भी प्रभावीत करती है। विद्यालय एवं विद्यालय से भी लोगो मे विशेष रूप से प्रभावीत करती है, जो की विद्यालय एक महत्वपूर्ण योगदान होता है। तथा आसपरोस इससे भी विशेष प्रभाव पड़ता है। जो की इन सब मिलके समाज मे

Scanned with OKEN Scanner

समाज के लोगो का विकास करने मे महत्वपूर्ण योगदान करती है। विकास एक परिवर्तनशील प्रक्रिया है। जेण्डर भी इसी विकास पर आधारीत होता है। विकास हर क्षेत्र मे एक दृष्टिकोण से दूसरे दृष्टिकोण में परिवर्तित होती रहती है। जेण्डर की भी सकारात्मक सोच की अवधारणा होती है। जहाँ तक शिक्षा के माध्यम से जेण्डर की भोसीकता बदलती रहती है। यह बदलने की प्रक्रिया बुद्धिजीवी वर्ग की देन होती है। ना की प्राकृतिक देन होती है।

Gender	Sex
• जेण्डर एक समाजीक व्यवस्था है। जिसकी संरचना व विकास समाज के लोगो द्वारा किया जाता है	• लींग एक जैवकिय विकास या संरचना है। जो कभी बदला नही जा सकता है। अपवाद:- जैवकिय विकास एंव संरक्षण की प्रक्रिया बदल रही है)
• जेण्डर एक श्रेणीबद्ध की धारणा करता है। जैसे:- मातृसत्ता, पितृसत्ता	• लींग श्रेणीबद्ध नही होता है) बल्कि युग्म आधारीत संरचना होती है।
• जेण्डर परिवर्तनशील होता है।	• लींग परिवर्तनशील नही होता है
• जेण्डर एक प्रभावपूर्ण कारक होता है, जैसे:- रुढिवादिता, धारणा, पूर्वाग्रह	• लींग की भूमिका आंतरिक पहचान के रुप में वर्णित किया जाता है।

Maulana Mazharul Haque ... Samastipur ESTD. 2010

- जेण्डर एक ऐसी मानसिकता है जो माना या अभिप्रेरणा से या अभिवृत्ती से बदली जा सकती है।
- लींग एक हार्मोनिक संरचना पर पुर्णतः आधारीत है।

उपर्युक्त अंतः संबंध से यह स्पष्ट होता है, की यह एक भूमिका के रूप मे प्रयुक्त होती है। यह जेण्डर की सोच एवं विचार को प्रेरीत करता है। जेण्डर की मांसकीता पर होती है। लैंगीय की पहचान लैंगीकता तक ही सीमीत रहती है। यह आवश्यकता के अनुरूप कार्य करती है। जेण्डर केंद्र बिंदु मे हमेशा व्यापक दृष्टिकोण मे बल देता है।

Name - Neha Kumari
Class - B.Ed (T) 'A'
Roll no - 230035
Course - Physical science Pedagogy
Date - 30/11/23

Que:- भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय वैज्ञानिकों के योगदान की विस्तृत चर्चा करें।

Ans: भारतीय वैज्ञानिकों ने भौतिकी जगत में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
भौतिक विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में जैसे- यांत्रिकी, प्रकाश, ध्वनि और रसायनिक प्रतिक्रियाएं, गणित इन परिघटनाओ को महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भौतिक विज्ञान में वैज्ञानिक का योगदान :- भौतिक विज्ञान में वैज्ञानिक का महत्वपूर्ण योगदान है। एक शानदार उदाहरण के रूप में हम सर आइजेक न्यूटन के बारे में बता सकते हैं। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के खोज किए। एक दिन न्यूटन साहब सेब के पेड़ के निचे बैठे थे। पेड़ से सेब गिरा तब वह इस बात पर चिंतन मनन किए उसके बाद गुरुत्वाकर्षण की खोज हुई।

भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में सी० वी० रमन की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। सी० वी० रमन को सन 1930 ई० में भौतिक के क्षेत्र में पुरस्कार मिला था।
इन्होने टी० वी० रेडियो तथा इंटरनेट की खोज की।

चार्ल्स बेवेज का भी भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। इन्होने कम्प्यूटर का आविष्कार

Scanned with OKEN Scanner

किया।

डॉ० ए० पी० जे अब्दुल कलाम के भी भौतिक के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। उन्हें बहुत सारे नोबेल पुरस्कार भी मिले। इन्होंने मिसाइल का अविष्कार किया। जिसके कारण उन्हें मिसाइल मैन भी कहा जाता है।

रदरफोर्ड ने परमाणु के Nucleor का खोज किए।

इन वैज्ञानिको के साथ भारत ने भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में बहुत योगदान दिए है।

जब भी कोई नई तकनिक खोज हुई है। यह नए संसाधनों, तकनिकों और उद्योगों को बढ़ावा मिली है और उस प्रकरण को नियंत्रित कामों में सहायता प्रदान करती है।

आइंस्टीन साहब ने प्रकाश विद्युत प्रभाव की खोज की। जिससे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में काफी सहुलियत हुई है।

भौतिक विज्ञान के क्षेत्र बहुत सारे ऐसे तकनिक का प्रयोग होता है जो भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा निर्मित है। और बहुत सारे ऐसे उपकरणों का भी उपयोग देश से लेकर विदेशों तक के लोग use करते है।

हाल ही में एक मिसाइल चंद्रयान-3 lanch हुआ जिसमें हमारे देश के बहुत सारे वैज्ञानिकों द्वारा बनाया गया है।

भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में न्यूटन का बहुत बड़ा योगदान है। इन्होंने बल की खोज की। और फैराडे ने विद्युत धारिता की खोज की। भौतिक विज्ञान के वैज्ञानिकों ने अमीटर तथ वोल्टमीटर के भी आविष्कार किए। जिससे विद्युतधारा मापने में सहायता मिलती है।

सी० वी० रमन ने टिंडल effict का आविष्कार किया।

और सर जे० जे० थामसन ने इलेक्ट्रॉन का आविष्कार किया। भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में ही प्रकाश से संबंधित परावर्तन तथा अपवर्तन का नियम दिए।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है कि भौतिक विज्ञान के जगत में वैज्ञानिकों का महत्वपूर्ण भूमिका है। जैसे- कृषि से संबंधित, अर्थव्यवस्था से संबंधित, प्रकाश से संबंधित, खाद्य पदार्थ तथा प्रकाश के परावर्तन, अपवर्तन, टिंडल प्रभाव, धारिता तथा रासायनिक विज्ञान में भी बहुत सारे है। डॉ० होमी भाभा न्यूक्लियर विज्ञान से संबंधित है।

Mazharul Haque Teachers' Training College, Mathurapur, Samastipur, ESTD-2010
DATE

Scanned with OKEN Scanner

Manisha Kumari
Class - B.Ed. 1st Year
Roll No - 230007
Sub - Pedagogy of Hindi
Sec - 'A'
Date - 30/11/23

7/8
Gautam Govind 07/12/23

PAGE NO.
Mazharul Haque Teachers' Training College
ESTD 2010
Samastipur
Mathurapur

Q. बाल विकास के विभिन्न अवस्थाओं में भाषा की भूमिका का विश्लेषण करें।

Introduction

भाषा विकास बौद्धिक विकास के लिए उत्तम माना जाता है। भाषा विकास बालकों में मानसिक व सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है. भाषा सर्वप्रथम माता-पिता, परिवार समाज व तत्पश्चात विद्यालय व बाहरी वातावरण से सीखता है। भाषा के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान किया जाता है।

भाषा के कारण ही मनुष्य सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। भाषा मूर्त से अमूर्त की ओर चलता है। भाषा विकास पढ़ने, लिखने व सीखने में सहायता करता है।

PAGE NO.
Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College
ESTD 2010
Samastipur
Mathurapur

विभिन्न अवस्थाओं में भाषा विकास —

① शैशवावस्था में भाषा विकास —

इस अवस्था में बच्चा अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा सीखता है शिशु का प्रथम भाषा रोना से शुरू होती है इस अवस्था में शिशु को स्वर का व्यंजन का ज्ञान नहीं होता है। लगभग 4 माह तक शिशु जो ध्वनियां निकालता है उसमें स्वरों की संख्या अधिक होती है। ~~माह में~~ 10 माह में बच्चा एक शब्द निकलता है जिसे वह बार-बार दोहराता है। 1 वर्ष में उसकी भाषा अस्पष्ट होती है केवल उसके माता-पिता ही बच्चों की ध्वनियां समझकर उसकी भाषा का अर्थ समझ पाते हैं। इसमें वाक्य रचना एक शब्द की होती है। जैसे - दूध के लिए दू-दू शब्द का उच्चारण करता है।

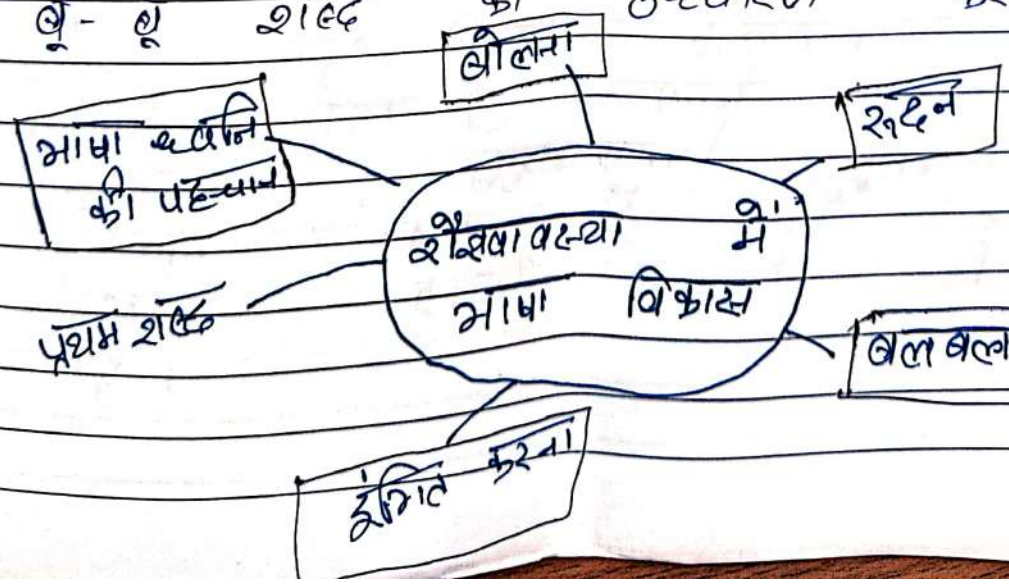

स्मिथ के अनुसार शैशवावस्था में भाषा का विकास —

आयु	शब्द
0-8 माह	0
10 माह	1
1 वर्ष	3
1 वर्ष 3 माह	19
1 वर्ष 6 माह	22
1 वर्ष 9 माह	118
2 वर्ष	212

एनास्थसी के अनुसार —

लड़कियों में लड़कों की अपेक्षा भाषा विकास शैशवावस्था में अधिक होता है : जिन बच्चों में हकलाना, बलबलाना, तोतलाना या गूंगापन रहता है उसमें भाषा विकास धीमी गति से होती है।

Scanned with OKEN Scanner

PAGE NO.:

Mazharul Haque Teachers' Training College
ESTD 2010
Samastipur
Mathurapur

(iii) बाल्यावस्था में भाषा विकास —

बाल्यावस्था में भाषा विकास आयु के साथ-साथ तीव्र होती है इसमें सीखने सीखने की गति बढ़ती है। इस अवस्था में बालक शब्द से लेकर वाक्य विन्यास तक की सभी क्रियाएँ सीख लेता है।

इस अवस्था में बालक अधिक प्रश्न करता है। इस अवस्था में वस्तुओं को देखकर उसके बारे में उसे ज्ञान होने लगता है। (~~Imagination~~) कल्पना वह वस्तुओं या जानवरों (सभी) को एक जैसा समझता है।

इस अवस्था में यदि बालक को बोलने में कोई त्रुटि होती है तो वह उसे सुधारने की कोशिश करता है।

मनोवैज्ञानिक डाईडर के अनुसार —

- लड़कियों की भाषा विकास लड़कों की अपेक्षा अधिक होती है।
- लड़कों की अपेक्षा लड़कियों के वाक्यों में शब्द संख्या अधिक होती है।
- लड़कियाँ अपनी बातों को सही ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता लड़कों से अधिक होती है।

Scanned with OKEN Scanner

PAGE NO.:

Mazharul Haque Teachers' Training College
ESTD 2010
Samastipur
Mathurapur

सीशोर के अनुसार बाल्यावस्था में भाषा विकास —

आयु	शब्द
4 वर्ष	56,000
5 वर्ष	96,00
6 वर्ष	14,700
7 वर्ष	21,200
8 वर्ष	26,300
10 वर्ष	34,300

(iii) किशोरावस्था में भाषा विकास

- इस अवस्था में किशोर / किशोरी में भाषा का ज्ञान पूर्णतः हो चुका होता है।
- इस अवस्था में बच्चों में शब्दकोश का विकास होता है। वे गुप्त code या symbol के द्वारा भी बात करते हैं जो सामने वाला जानता है।

PAGE NO.
Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College
ESTD. 2010
Samastipur
Mathurapur

- इस अवस्था में साहित्य पढ़ने की रुचि होती है।

- किशोर में अनेक शारीरिक संवेग उत्पन्न होते हैं। भाषा का विकास भी उनसे प्रभावित होता है।

- इस अवस्था में कल्पना शक्ति का विकास होता है, जैसे- साहित्य, कविता, चित्रकार करता है।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त वर्णनों के आधार पर कहा जा सकता है कि विभिन्न अवस्थाओं में बच्चों में भाषा का विकास होता है। जो भाषा विकास बचपन से ही शुरू होकर मुख्य रूप से शैशवावस्था में हो जाती है। बच्चा रोना, बलबलाना सीखता है। बाल्यावस्था में बच्चा 1-2 शब्दों से वाक्य बनाना सीख जाता है। किशोरावस्था में पूर्णतः भाषा विकास हो चुका होता है।

1

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College
ESTD. 2010
Samastipur
Mathurapur

Name - Stuti Singh
Roll - 230002
Class - B.Ed Ist Year
Subj - E.P.C '1'
Date - 29-11-23

07/08

Describe the different types of reading skills and explain its strategies

Reading skill is a way to read within the text or interact within the text understand the meaning of written text analyse it to undergo within the deeper meaning.

Reading skill is the third skill of the all skills. In short, LSRW.

L - Listening skill
S - Speaking skill
R - Reading skill
W - Writing skill

Reading skill enables us to go through a text, and emmit what we percieve after reading the text. Reading skill is a major skill for the development of an individual, we percieve this skill from the very beginning of our lives. once we start

Scanned with OKEN Scanner

reading their is no going back in terms of education. Reading skill, we inhibit it after grasping the very basis of a subject its matter.

Meaning and features of Reading Skill

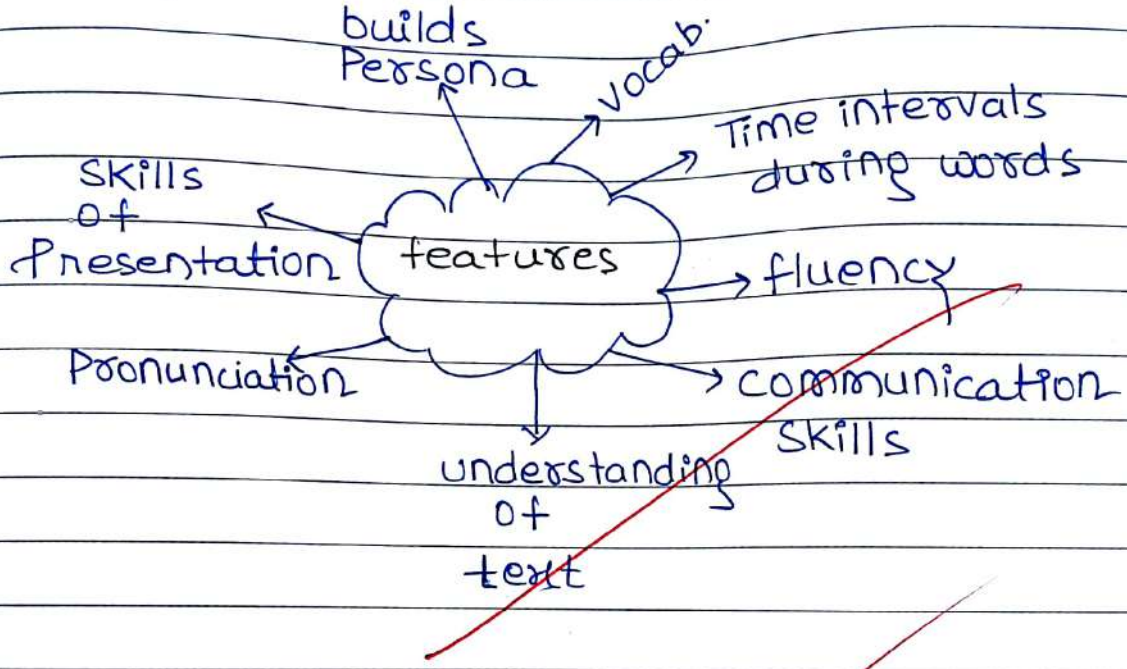

* Fluency :→ Once we pertain knowledge about words, its pronunciation we become more fluent in reading.

→ fluency is basic feature of reading skill.

* Pronunciation :→

In reading skill pronunciation is the basic, without correct prouunciation we can not have proper reading skill.

* Skill of presentation :

Reading skill, this skill makes a person more accurate, more confident and with correct pronunciation one can have the best presentation skill.

* Types of Reading skills

- Skimming
- Scanning
- Intensive
- Extensive

• Skimming

Skimming is the thorough going within a text, it can also be said as the a gist reading. Thorough going within a text

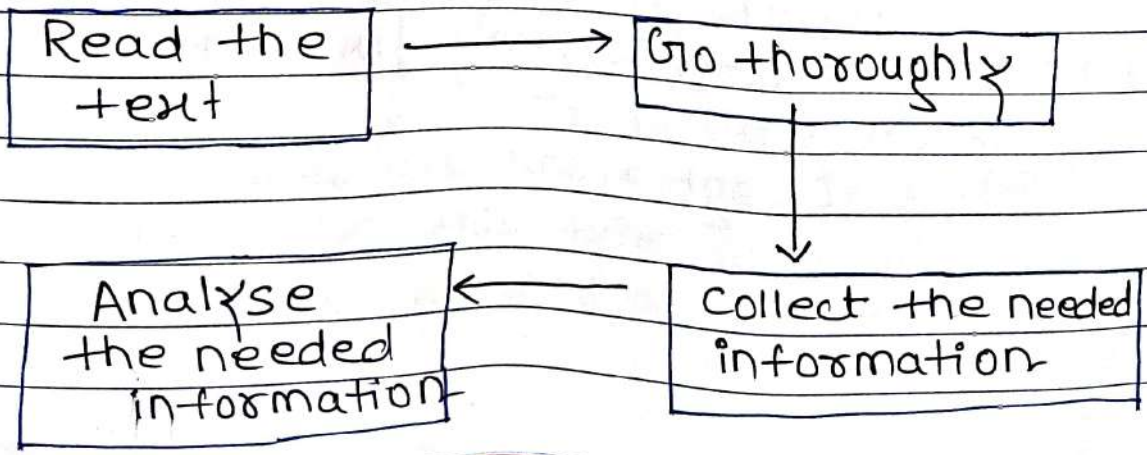

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College, Mathurapur, Samastipur, ESTD. 2010

• Scanning :→

Scanning is done for the required information about a topic within the text. This requires quickness. It demands proper attention, analytical way of Reading as well.

On demand scanning
Auto scanning.

• Intensive

This type reading demands proper attention. It is done majorly for one's attainment of enjoyment. It demands us all within the text. It is done for Knoweldge of a subject as well.

• Extensive

Extensive Reading is the reading within with more than one subject on a topic. We consult different demeaning on books, about that specific topic.

Read the text → Analyse → compare data

It is done for enjoyment as well as knoweldge. It is done for one self, this type of reading demands time as well as attention.

Scanned with OKEN Scanner

*Strategies of reading skill

→ We can start the reading from the very basic of pronunciation, and aloud reading.

→ We should have the understanding of comma, puntuations, colons, semi-colons take that time of interval.

→ We can enhance by having proper fluency, develops vocabulary.

→ One the other hand confidence makes our reading very organic. we should have the accuracy.

→ Reading skill can be developed within self.

Conclusion

It is clear from the above content that Reading skill is a must in ours life. Reading skill can be developed with proper guidance and the actual time we give on it.

Reading skill enables us have the proper meaning within the text as well as it glorifies our persona, and our aura, so it is basis we can say.

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College
ESTD. 2010
Samastipur
Mathurapur

Scanned with OKEN Scanner

Name → Stuti Singh
Roll → 230002
Course → E.p.C '2'
Date → 29-10-23

EPC-2

7/8

* Describe the concept of drama. How it is relevance for education.

Introduction : Drama refers to present any theme or realistic situation by an actor or actress on stage, this presentations on the stage is called drama. In modern times this presentation has changed over a course indeed drama in teaching the best way of teaching.

Drama can be referred as the presentation of a story in a way that it evokes the moral qualities, ethical qualities, it changes one as an individual and develop's one's personality.

The true representations of any act can be very helpful in education. because whatever we see by ourself can go in our permanent memory, indeed it helps us to make the teaching go in our permanent memory.

* Meaning of Drama

The word drama comes from the word 'dran' mean to act or

or to move. Drama, generally is an act of true representations of story.

Dran = to act or
to move

* Characteristics of Drama

Drama consists of :

- Theme
- Characters
- Background sounds
- Background artist
- Lead

* Concept of drama

There are generally 3 types of drama :

(I) Spiritual concept
(II) General concept
(III) ~~Spi~~ Education concept

(I) Spiritual concept : These types of Drama usually have a concept of 'spirituality' that is the concept ~~read~~ related to worship, God, Goddess.

Scanned with OKEN Scanner

We can also include the 'Mahabharat' and 'Ramayana' in its example.

(II) General concept :

In the General, concept of drama it deals with day to day topic related to moral, ethical topic. This type of dram is the representation of general life.

(III) Educational concept :

In Education, Drama plays a vital role, as the thing we see directly we assimilate in ourself. It helps us in education very vitally :-

These are the key structure how it helps in education :

Scanned with OKEN Scanner

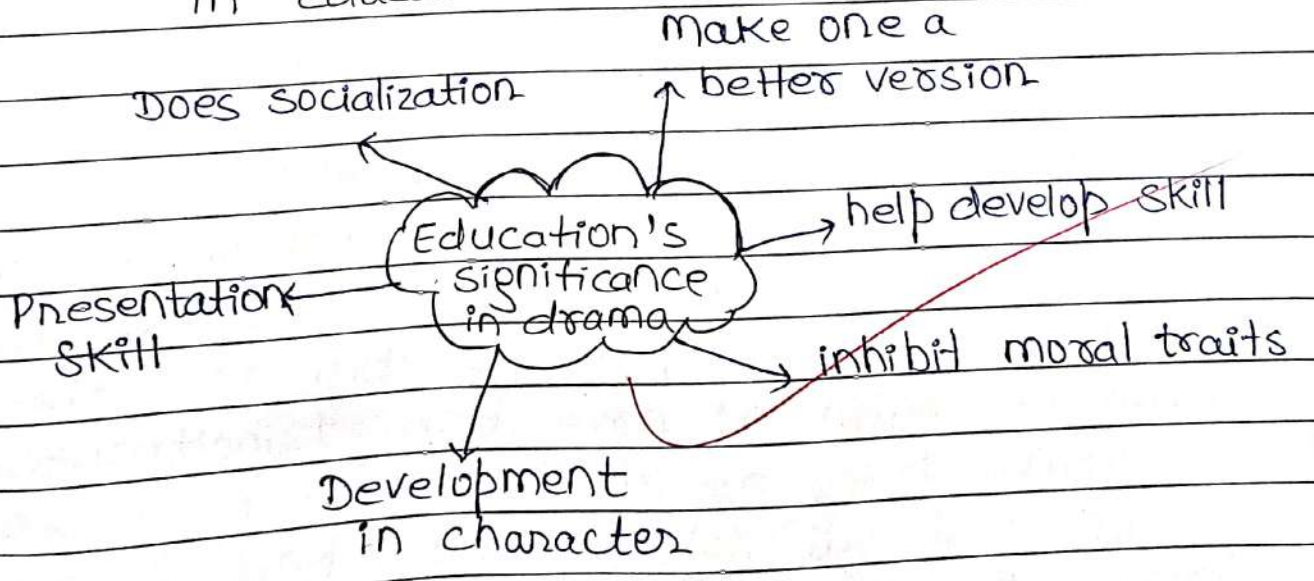

* Relevance of drama in Education :

⇒ It develops a personality.

⇒ It develops presentation skill.

⇒ It develops moral and ethical values in oneself.

⇒ Drama gives us the art of presentation or presentating our emotions.

⇒ It develops us sympathically, as well as empathically.

⇒ It evolves us to be better version of ourself.

* Conclusion :

7

We can sum up by saying that in education drama plays a vital role. It definetly develops a personality of one-self. It indeed, Help us develop as a educationist and even it helps teachers as well as students to grasp things quickly and store it for life long. So, 'Drama is the life line of Education'.

Scanned with OKEN Scanner

Name :- Anshu Raj
Class :- B.Ed Ist Year
Roll :- 230068

Date :- 30/10/23
Marks :- 8
Sec :- 'B'

Course :- EPC 3 - Critical Understanding of ICT

Q⇒ What is computer ? How can they classify ? Also describe generations of computers.

Ans→ In modern days, computer is an integral part of our daily lives, revolutionzing the way we work, communicate and entertain ourselves. From desktop to laptop, tablets to ~~mobile~~ smart phones, computers come in various forms, yet many people are still unfamiliar with their inner working and potential.

computers have the ability to store, process, and manipulate data. The term 'computer' is derived from the latin word "computare which mean "to calculate". A computer is made to run programs and apps by using hardware and software. It also has a memory to store data, program, and what they produce.

Definition :- An computer is an electronic device wherein we need to input raw data to be processed with a set of programe to be produce a desirable output.

classification :- computers can be classified in two ways.

(1) According to based on their data handling capacity, —
   (a) Analog computer
   (b) Digital computer
   (c) Hybrid computer

(2) According to based on their sizes :—
   (a) Micro-computer
   (b) Mini-computer
   (c) Main-frame computer
   (d) Super computer
   (e) Work Station.

→ Analog computer :— The main function of Analog computer is to process data. The data that changes frequently and does not have discrete values are called the data and analog computers are used at places where we have approximate values.

→ Digital computer :— Digital computers are designed in a way so that they can perform calculations and logical operations at high speed. These computer input raw data and with the help of the programs stored in their memory, it gives the final output. Digital computer can only understand binary language i.e, 0 and 1.

Scanned with OKEN Scanner

→ Hybrid computers :- Hybrid as the name suggests it is a mixture of both analog and digital computers. Hybrid computers are as fast as analog computer and also has accuracy like that of digital computers.

Generations of computers :-

(1) First Generation computer (1940s - 1950s) -
The first generation computers used vaccum tubes for processing and magnetic drums for storage. They were very large, expensive and unreliable.

(2) Second Generation computer (1950s - 1960s) -
The second generation computers replaced vaccum tubes with transistors making them smaller, faster and more reliable. Magnetic core memory was also introduced, which was faster and more reliable than magnetic drums.

(3) Third Generation computer (1960s - 1970s) -
It used integrated circuits, which allowed for even smaller and faster computers. They also introduced magnetic disk storage and operating systems.

Scanned with OKEN Scanner

(4) Fourth Generations Computers (1970s - 1980s) —
It saw the introduction of microprocessors which makes personal computers possible. They also introduced graphical user interface.

(5) Fifth Generations Computer (1980s - Present) —
It still going on and is focused on artifical intelligence and parallel processing. This generation also saw the development of mobile computing and the internet.